जून 2019

# सामान्य ज्ञान दर्पण

वर्ष 32 एकादश अंक

## इस अंक में...


5 अन्यों की सफलता के प्रशंसक बनें

**विशेष स्तम्भ**

8 समसामयिक सामान्य ज्ञान

16 आर्थिक परिदृश्य

19 राष्ट्रीय परिदृश्य

23 अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य

28 आईपीएल-12 की 8 टीमें व उनमें शामिल खिलाड़ियों के नाम

29 क्रीड़ा जगत्

30 सिविल सेवा परीक्षा 2018 का परिणाम : सफलता का रहस्य है सही रणनीति, ईमानदारी और लक्ष्य-केन्द्रित मेहनत

32 भारत की प्रमुख नदियाँ

35 समसामयिक महत्वपूर्ण तथ्य

36 सारभूत तत्व कोष

40 अनुप्रेरक युवा प्रतिभाएं

43 विज्ञान समाचार

**लेख**

46 राजनीतिक लेख—मजबूत होती आरक्षण की बैसाखी

47 भाषाई लेख—आबूधाबी ने न्यायालयों में हिन्दी को बनाया अधिकृत भाषा

48 कॅरियर लेख—भारतीय रेलवे : स्नातक व 12वीं पास के लिए भारतीय रेलवे में 35, 277 पदों पर नियुक्तियाँ—2019

53 कृषि लेख—भारतीय कृषि और किसान

**हल प्रश्न-पत्र**

55 मध्य प्रदेश पुलिस आरक्षक (जनरल ड्यूटी) भर्ती परीक्षा, 2017 का हल प्रश्न-पत्र

**एस.बी.आई. पी.ओ. (प्रा.) परीक्षा, 2018 का हल प्रश्न-पत्र**

63 तर्कशक्ति

66 English Language

69 संख्यात्मक अभियोग्यता

73 एस.एस.सी. मल्टी टॉस्किंग (गैर-तकनीकी) स्टाफ परीक्षा, 2017 का हल प्रश्न-पत्र

80 आर.आर.बी. लेवल-1 ग्रुप 'डी' कम्प्यूटर आधारित परीक्षा, 2018 का हल प्रश्न-पत्र

88 आगामी रेलवे भर्ती बोर्ड एन.टी.पी.सी. (स्नातक) कम्प्यूटर आधारित परीक्षा, 2019 हेतु विशेष हल प्रश्न

96 आगामी रेलवे रिक्रूटमेण्ट बोर्ड (जे.ई.) कम्प्यूटर आधारित परीक्षा विशेष हल प्रश्न

104 कोर्स ऑन कम्प्यूटर कॉन्सेप्ट्स (CCC) वस्तुनिष्ठ प्रश्न

107 मनोवैज्ञानिक/अभिरुचि परीक्षण-असिस्टेंट लोको पायलट (ALP) के लिए

119 क्या आप परिचित हैं ?

121 रोजगार समाचार


सामान्य ज्ञान दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. **-सम्पादक**

• **E-mail :** publisher@pdgroup.in • **Website :** www.pdgroup.in

# अन्यों की सफलता के प्रशंसक बनें

—साध्वी वैभवश्री 'आत्मा'

*''जो स्वयं में प्रसन्न है वह दूसरों को भी प्रसन्न रख सकता है.''*

*– एन्नी फ्रेंक*

मनुष्य मात्र अपने सौभाग्य और दुर्भाग्य का जिम्मेदार स्वयं होता है. कैसे बन जाते हैं हम दुर्भाग्यशाली ? जब हम सौभाग्यशाली की समृद्धि को देखकर ईर्ष्या से भरते हैं, तब हम दुर्भाग्यशाली बन जाते हैं. जब हम किसी भी सौभाग्यशाली के यश कीर्ति को सुनकर ईर्ष्या से भर जाते हैं, तब हम दुर्भाग्यशाली बन जाते हैं यदि किसी भी सौभाग्यशाली की, जिस समृद्धि, जिस यश कीर्ति, जिस कला, जिस गुणवत्ता की हमारे मन में अहो भावना जगती है. अरे वाह ! धन्य है, बहुत पवित्र है. ये व्यक्ति इसकी कला बेजोड़ है. इसका ज्ञान बहुत गहरा है, इसका विनय अप्रतिम है, इसका ऐश्वर्य निष्कलंक है. जब हम किसी के सौभाग्य की प्रशंसा से अपने हृदय को भरते हैं और वो प्रशंसा सद्भावना युक्त हो, वो तारीफ प्रेमपूर्ण हो, वो प्रशंसा आनन्दमय हो, आनन्दमय भावों से हम प्रशंसा से भरते हैं, तो स्वाभाविक रूप से हमारा सौभाग्य जगना शुरू हो जाता है और हमारे दुर्भाग्य के दिन समाप्त होने लग जाते हैं. आइए देखें हम अपनी जिन्दगी में झाँकें, अपने गिरहवान में झाँकें, क्या हम ऐसा कर पाते हैं ? हाँ, कर पाते हैं और नहीं भी कर पाते हैं. कर पाते हैं उन लोगों के प्रति जो बीत चुके, जो इस दुनिया से जा चुके. हम उनके जयकारे लगा देते हैं. जैसे–गुरुनानक देव की जय, भगवान महावीर स्वामी की जय, गौतम स्वामी की जय. हम सब इन सबके जयकारे लगा सकते हैं, जो हमारी जिन्दगी से दूर जा चुके हैं. जिनसे हमारा कोई सम्पर्क नहीं है. हम उनकी प्रशंसा कर पाते हैं. आज वर्तमान में बहुत सारे ऐसे उदाहरण हैं जो अच्छे कलाकार हैं, जो अच्छे मिलेनियर हैं. हम उनकी भी प्रशंसा कर सकते हैं. हम सौन्दर्य की भी प्रशंसा कर सकते हैं. किसी ने यश पाया उसकी भी प्रशंसा कर सकते हैं, लेकिन हमारे सगे सम्बन्धी ने यश पा लिया हो, सौभाग्य पा लिया हो, समृद्धि पा ली हो. हमारे सगे सम्बन्धी कोई महान् विद्वान् हो, गुणवान हो, कलाकार हो, विनयवान हो उसकी प्रशंसा करने में बहुत मुश्किलें होती हैं क्यों ! क्योंकि, अपने निकट का आदमी अपने से आगे बढ़ जाए. यह देखकर के मन का खुश होना बहुत कम लोगों के साथ होता है. प्रायः लोग दूसरों के भाइयों की बड़ी प्रशंसा करते हैं. अपने भाइयों की प्रशंसा नहीं कर पाते. किसी और ने कुछ इकट्ठा किया. कुछ कमाया. कुछ बेजोड़ काम किया. कुछ नाम कमाया. उस सबकी प्रशंसा कर सकते हैं. पर मेरे पड़ोसी ने किया, मेरे रिश्तेदार ने किया, मेरे करीबी मित्र ने किया. तब कई लोग खुश होते हैं, तो कई लोग खुश नहीं होते. पता है क्यों! क्योंकि अपनों की कमियाँ हमें ही दिखाई देती हैं. हम उनके साथ रहते हैं. इसलिए हमें पता होता है. किसी परदे पर देखकर किसी भी अभिनेता की प्रशंसा करना बहुत आसान है, परन्तु तुम्हारे घर में अगर कोई अभिनेता हो और उसकी प्रशंसा करनी हो तो तुम कहोगे कि क्या है, इतने-इतने घण्टों सोता रहता है, ये खुद का कुछ काम नहीं करता है. इसको जरा-सी व्यावहारिक नहीं होती है. खाली बस ये नाटक कर देता है. अब देखो जब अपना घर का करीबी व्यक्ति कलाकार होता है, तब हमें उसकी कमियाँ नजर आती हैं. उसकी प्रशंसा करना हमारे लिए मुश्किल हो जाती है. हम उसकी कमियों को बढ़ा-चढ़ा के बता देते हैं और उसके गुणों के प्रति कहीं-न-कहीं उपेक्षा भाव रखने लग जाते हैं, प्रशंसा करने लगते हैं. अथवा हल्की-फुल्की प्रशंसा करके कहते हैं, झेलना तो हमें ही पड़ता है. पीछे का काम सब हमें ही सँभालना पड़ता है और इस तरह से हम अपने अहंकार को पुष्ट करते हैं और दूसरों की कमियों को दिखाकर दूसरों की प्रशंसा में बढ़ती चढ़ती न रख करके कहीं न कहीं हम अपनों की उसकी उपेक्षा जिन्दगी में काँटे बो लेते हैं. पर ऐसा चलता आ रहा है. सदियों से थोड़े लोग समझते हैं कि निकट का हो या दूर का हो, व्यक्ति कोई भी हो उसके गुणों की प्रशंसा करनी चाहिए. वो अपना हो या अपना न हो उसके सौन्दर्य की, उसके सौभाग्य की, उसके कर्मठता की उसके पुरुषार्थ की हमारे मन में सद्भावना होनी चाहिए. उसके प्रति हमारे मन में कभी किसी भी तरह का द्वेष, ईर्ष्या, प्रतिस्पर्धा, तुलना, चुगली, निन्दा ऐसे विचार नहीं होने चाहिए. परन्तु प्रायः ऐसा ही होता है. न हम दुर्भाग्यशाली क्यों रह जाते हैं. उन कारणों को खोजेंगे, तो पता लगेगा कि हम कई बार दूसरों के साथ अपनी तुलना करते ही चले जाते हैं और तब उस तुलना में हमारे मन में कई